अवधी का परिचय

HINDI (HC) 4016

- डॉ० इंदु भान भगत
असि० प्रो० नगाँव गर्ल्स कॉलेज, नगाँव, असम

'अवधी' का नामकरण अवध (अयोध्या) के आधार पर हुआ है। यह पूर्वी हिन्दी की बोलियों में सर्वप्रमुख तथा सर्वाधिक समृद्ध बोली है। इसका विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से माना जाता है। इसका क्षेत्र लखनऊ, फैजाबाद, सीतापुर, रायबरेली, गोंडा, बाराबंकी, प्रतापगढ़ तक फैला हुआ है। भारत के स्वतंत्र होने से पहले इस पूरे क्षेत्र का नाम 'अवध' हीथा है।

'अवधी' यद्यपि उत्तर प्रदेश की एक सीमित क्षेत्र की बोली है पर मध्य-युग में इसे एक प्रौढ़, समृद्ध साहित्यिक (काव्य) भाषा होने का गौरव मिल चुका है। मुगल शासन के दौरान अनेक सूफी-संत लेखक - अवध में बस गये थे। उन्होंने अपने प्रेम-मार्गी मत का जन-साधारण में प्रचार करने के लिए वहाँ की लोक-बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया। यह बोली अवधी थी। मध्ययुग के लोकनायक और हिन्दी के प्रसिद्ध भक्त-कवि गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने अमर महाकाव्य रामचरितमानस की रचना अवधी में की। सूफियों की 'अवधी' जहाँ ठेठ जन बोली थी, वहीं तुलसीदास ने उसे अपने संस्कृत ज्ञान के पुट से एक परिमार्जित और परिष्कृत काव्य-भाषा बना दिया। परन्तु इसके बाद 'अवधी' अधिक समय तक काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित न रह पाई। इसका कारण था हिन्दी काव्य के क्षेत्र में ब्रज का वर्चस्व हो जाना। यहाँ तक कि स्वयं तुलसीदास ने अपनी अंतिम रचना 'कवितावली' भी ब्रजभाषा में लिखी।

इस प्रकार 'अवधी' यद्यपि साहित्यिक भाषा के पद पर अधिक समय आसीन न रह सकी, तथापि लोक-व्यवहार में उसका प्रचलन आज भी है।

विशेषताएँ

(क) ध्वन्यात्मक

(i) स्वर - अ, आ, इ, ई, ए, ऐ, ओ, औ।

व्यंजन - कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग एवं य, र, ल, व, स, ह, ड़, ढ़, न्ह, म्ह, ल्ह, र्ह।

- 'अवधी' की ध्वनि-संरचना और रूप-रचना मानक हिन्दी से पर्याप्त भिन्न है। इसमें 'ऐ' 'औ' का उच्चारण 'अइ' तथा 'अउ' के रूप में होता है - ऐसा > अइसा, और > अउर।
- व्यंजन ध्वनियाँ शब्द के अंत में प्रायः उकारांत उच्चरित होती हैं। यथा - सतु, रामु, दिनु इत्यादि।
- कुछ पदों के अंत में 'इया' और 'वा' लगाने की प्रवृत्ति है। जैसे - छोकरिया, बेटवा, बचवा आदि।
- 'ड़' का उच्चारण 'र' के रूप में होता है। यथा - लड़का > लरिका,
- 'व' प्रायः 'ब' बोला जाता है - वयस > बैसु, वदन > बदनु, वारी > बारौ, विचार > बिचार, विशाखा > बिसाखा।
- क्रिया पदों के अंतिम 'ना' के स्थान पर 'इबो' बोला जाता है; यथा - करना > करिबो, चलना > चलिबो आदि।
- 'ष' का 'ख' उच्चारण होता है - दोष > दोख।
- 'य' के स्थान पर 'ज' का उच्चारण होता है - यमुना > जमुना।

(ख) संज्ञा रूप

अवधी में प्राप्त संज्ञा-शब्दों के तीन रूप (ह्रस्व, दीर्घ और दीर्घतर) हैं -

ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घतर
घोड़, घोर	घोड़वा, घोरवा	घोड़ौना, घोरौवा
लरिका	लरिकवा	लरिकौना

(ग) सर्वनाम

अवधी में सर्वनाम के प्राप्त रूप निम्नलिखित हैं -

• पुरुषवाचक

उत्तम पुरुष (मैं) = मइँ, मइ, हौं

मध्यमपुरुष (तुम) = तू, तूँ, तइ, तुई

अन्य पुरुष (वह) = उ, ऊ, ओ, वह।

• निश्चयवाचक (यह) — ई, इह, एहु, येहु।

• सम्बंधवाचक (जो) - जे, जवन, जौन, जउन।

• प्रश्नवाचक (कौन) — कवन, कउन,।

• निजवाचक (आप) - आपु, अपना, आपन।

(ग) विशेषण

अवधी में विशेषण प्रायः ओजनांत होते हैं। यथा - नीक, भल, थोर।

संख्यावाचक विशेषण निम्नलिखित हैं -

दुई (दो), तीनि (तीन), चारि (चार), पाच (पाँच),
छइ (छः), नव (नौ), इगारा (ग्यारह), बारा (बारह) आदि।

(घ) क्रिया-रूप

• सहायक क्रिया - अहै, रहै, रहब।

• पूर्वकालिक क्रिया - करके (करके), खाइके (खाकर), सोइके (सोकर)।

• आज्ञार्थक क्रिया - देखि, देख, चल, आउ, जाहु।

• प्रेरणार्थक क्रिया - देखाव, सुनाव, चलावइ, खरिदवाव।

(ङ) अव्यय - अबइ, आपु, कब, इहाँ, ओहर, अस, जस।

अवधी की भाषिक प्रकृति को समझने के लिए कतिपय अन्य उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं -

मानक हिन्दी	अवधी
मैं चला	मई चलेउँ।
तू चला	तू चलिस।
हम चलते हैं	हम चलत।
मिट्टी का दीप जलता है।	माटी केर दीप जलइ।
मेरा सिर दुखता है।	मोर मूड़ पिरावत अहइ।
लड़कों ने गजब कर दिया।	लरिका गजब कर दिहिन।
हम भी चलेंगे।	हमउँ चलइ।
बेटा भी चलेगा।	बेटवा उ चलिहैं।

अतः उपरोक्त बिन्दुओं पर हमने अवधी भाषा की ध्वनि, शब्द, रूप एवं संरचना की चर्चा की। ये सभी बिन्दु 'अवधी' के स्वरूप को उजागर करने में पूर्ण सक्षम हैं।